हिन्दी

(www.tiwariacademy.com)
(स्पर्श) (पाठ 1)(कबीर – साखी)
(कक्षा 10)

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1:
मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर 1:
मीठी वाणी बोलने वाले व्यक्तियों में अहंकार नहीं होता ,मन शांत रहता है और दूसरे व्यक्ति भी उसके मधुर वचन सुनकर सुखी होते हैं । इसके विपरीत कर्कश और कटु वचन मन को पीड़ा देने वाले होते हैं।

प्रश्न 2:
दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है ? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर 2:
जिस प्रकार दीपक अपनी रोशनी से चारों ओर उजाला फैला देता है, उसी प्रकार ज्ञान रूपी दीपक अपने प्रकाश से अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट कर देता है । इस प्रकार ज्ञान के प्रकाश से व्यक्ति का अहं भी समाप्त हो जाता है ।

प्रश्न 3:
ईश्वर कण–कण में व्याप्त है , पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते ?

उत्तर 3:
जिस प्रकार हिरण की नाभि में कस्तूरी होने पर भी वह उसकी सुगंध को पाने के लिए पूरे जंगल में भटकता फिरता है , ठीक उसी प्रकार हमारे शरीर में ईश्वर का वास होने पर भी हम उसे पाने के लिए पूरे संसार में भटकते फिरते हैं ।

प्रश्न 4:

संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं ? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है ?स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर 4:

इस संसार में अज्ञानी और भोगी व्यक्ति सुखी हैं, जो ज्ञानी हैं वे दुनिया की स्थिति देखकर दुखी हैं सोना और जागना ज्ञान और अज्ञान दोनों के प्रतीक हैं । ज्ञान ओर अज्ञान के प्रयोग से कवि संसार में नई चेतना लाना चाहता है ।

प्रश्न 5:

अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है ?

उत्तर 5:

अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कवि ने निंदक को अपने पास रखने की सलाह दी है क्योंकि उसकी निंदा करने से ही हमारे अंदर अहं का भाव नहीं आएगा और मन निर्मल तथा पवित्र हो जाएगा।

प्रश्न 6:

'ऐकै अषिर पीव का , पढ़ै सु पंडित होइ '– इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है।

उत्तर 6:

इस पंक्ति के माध्यम से कवि ईश्वर प्रेम के बारे में बताना चाहता है उसका कहना है कि ईश्वर प्रेम से ही हमें ज्ञान और मुक्ति मिल सकती है ।

प्रश्न 7:

कबीर की उद्धत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर 7:

कबीरदास जी की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता अभिव्यक्ति की की निर्भीकता है। अपनी शिक्षा के बारे में बताते हुए उन्होने कहा है कि – 'मसि कागद छुयो नहीं , कलम गही नहीं हाथ 'अर्थात उन्होने कभी भी कागज और कलम को हाथ तक नहीं लगाया । कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी भाषा या खिचड़ी भाषा की संज्ञा भी दी गई है । उनकी भाषा में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग मिलता है । उनकी भाषा में एक ऐसा सौंदर्य है जो अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता है । हृदय से निकली अभिव्यक्तियों के कारण उनकी भाषा सहज , सरल और मन पर सीधा प्रहार करने वाली है ।

भाव स्पष्ट कीजिए:

1:

बिरह भुवगंम तन बसै , मंत्र न लागै कोइ ।

उत्तर 1:

कबीरदास जी ने विरह के महत्व को समझाते हुए कहा है कि जब विरह रूपी सर्प शरीर में अपना वास कर लेता है तो कोई भी मंत्र काम नहीं करता है क्योंकि विरह की इसी सर्वोच्च दशा के बाद ही ईश्वर के प्रेम की प्राप्ति हाती है।

2:

कस्तूरी कुंडलि बसै , मृग ढूँढ़ै बन माँहि ।

उत्तर 2:

कबीरदास जी कहते हैं कि जिस प्रकार हिरण की नाभि में कस्तूरी होने पर भी वह उसकी सुगंध को पाने के लिए पूरे जंगल में भटकता फिरता है । वैसे ही मनुष्य भी ईश्वर के ज्ञान के अभाव में उसे ढूँढ़ता फिरता है।

3:

जब मैं था तब हरि नहीं , अब हरि है मैं नाहिं ।

उत्तर 3:

कबीरदास जी कहते हैं कि जब तक मेरे अंदर मैं का भाव 'अहंकार ' था तब तक मुझे हरि की प्राप्ति नहीं हुई थी । अब मेरे अंदर से अहंकार समाप्त हो गया है और मुझ पर ईश्वर की कृपा हो गई है ।

4:

पोथी पढ़ि पढ़ि जब मुवा , पंडित भया न कोइ ।

उत्तर 4:

कबीरदास जी कहते हैं कि बड़े बड़े ग्रंथ पढ़कर लोग अपने को ज्ञानी समझने लगते हैं लेकिन ईश्वर के प्रति यदि प्रेम और भक्ति का भाव नहीं जागा तो वह पूर्ण ज्ञानी नहीं बन सका अर्थात अज्ञानी ही रहा ।